आपातकाल में सृजन फुलवारी

अदिति रूसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

रमेश चंद्र शर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-170-1

संपादक- डॉ.प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, रमेश चंद्र शर्मा

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RAMESH CHANDRA SHARMA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	यादों की परछाई!	6
2.	शब्दों का परिसीमन	7
3.	इतना भी कमजोर नहीं!	8
4.	आशा डोर बंधी जबसे!	9
5.	विधि हुए वाम -भज राम!	10
6.	आए प्रभु तेरी शरण!	11
7.	संकट मोचन नाम तिहारो!	12
8.	एक दीप मेरा मिला दो!	13
9.	फांस अंदर धंसी है!	14
10.	अंधेरा बहुत है दीपक जलाओ!	15
11.	मां धनुष दे दे मैं रामा बन जाऊं!	16
12.	कनक देह का परावर्तन!	17
13.	नयन में उलझा गगन	18
14.	इस बार अभिनव प्रयोग कीजिए!	19
15.	सिंदूरी शाम!	20
16.	नया सवेरा आएगा हौसला रख	21

यादों की परछाई!

सुबह की कुनकुनी धूप में
रेत में सने पर लिए
मौन सागर के किनारे आकर, बस बैठ जाता हूं!
सोचता हूं कहीं दूर से
भटकी लहर पर सवार हो
अचानक पैरों में गुदगुदी कर
मुझे हैरान कर दोगे!
धीरे-धीरे पसरती धूप
सवार हो ऊंची लहरों पर
बेफिक्र रेत पर लेट कर सुस्ताने लगती!
भूला भटका हवा का झोंका,
अपलक ताड़ती आंखों में
रेत भर अंधेरा कर देता!
रेत जो यथार्थ है,
रेत जो तृष्णा है,
रेत जो विरागी है,
अचानक अनुरागी मन में जिज्ञासा भर देती है!
कितनी ही बार मैंने
रेत भरी अंधियारी आंखों से
एक अदृश्य परछाई को
मुझे छूते हुए महसूस किया!
सागर की बड़बोली लहरें
मन की मृग मरीचिका में घिर
मूर्छित निशब्द होती!
लुक छुप कर चलता
सुपरिचित प्रतिबिंब मन को व्यथित कर देता!
लहरों पर सवार खारापन
बहती आंखों से शह पाकर
मीठे मन को खारा करता!
कौन कहता परछाई साथ नहीं देती?
सागर किनारे सच यह है
लहरों पर सवार यादों की परछाई पीछा नहीं छोड़ती!

शब्दों का परिसीमन

तुमने तो मौन में रहकर
उसकी परिभाषा बदल दी!
क्या बिना कुछ कहे
संकेत मात्र से मनोभाव
यथावत व्यक्त किए जा सकते?
भाव सरिता के बहते ही
मौन के समस्त बांध
टूट कर बिखर जाते!
बेशक आंखों से
अनकही, अनजानी, व्यथा को
प्रस्फुट होते अतिरेक को
शब्द दिए जा सकते हैं!
अंतर्मन का करुण क्रंदन
इस छोर पर आकर
अपाहिज हो जाता!
शब्दों का परिसीमन कर
मौन का अवलंबन
एक मकड़जाल मात्र है!
अपने को, अपने में
सीमित रखने का असफल उपक्रम!
समय शेष है!
समय रहते अभी
कुछ बोलो, मौन तोड़ो!
किसी दिन यह मौन चुपचाप
दम तोड़ देगा?
ऐसा ना हो सारे कथ्य
मौन की भेंट चढ़कर
अप्रासंगिक हो जाएं?
शब्दों का परिसीमन छोड़
मौन को विस्तार दो!

इतना भी कमजोर नहीं

आंधी उड़ा कर ले जाए
लहरें बहा कर ले जाए
पर्वत से राईं बन जाऊं
इतना भी कमजोर नहीं!
द्वारे आकर दस्तक देकर
मुझसे मेरा मस्तक लेकर
बिना सहमति लूटा जाऊं
ऐसा तो कोई चोर नहीं!
मन, उपवन में कूक रहा
नेह बिना, कंठ सूख रहा
बिन बादल नचता जाऊं
ऐसा भी कोई मोर नहीं!
प्रणय प्रभाती गाता कोई
बंसी मीठी बजाता कोई
चित चुराले बनकर कान्हा
ऐसा कोई चितचोर नहीं!
मंदिर में नित दीप जलाऊं
निस दिन प्रभु को ध्याऊं
कहां जाऊं तुम्हें छोड़कर
ऐसा भी कोई ठोर नहीं!
स्वप्न में सदा प्रत्यक्ष पाकर
जन्मों की प्यास बुझा कर
फिर से अंधड़ में खो जाऊं
इतनी भी कोई भोर नहीं!
भावों में यूं ही बह जाता हूं
शब्द घात भी सह जाता हूं
व्यंग बाण चला दे मुझ पर
इतना किसी में जोर नहीं!
आरत जन मन करे आरती
जय जय जय मां भारती
कान कपास भरकर सोचें
इतना भी कोई शोर नहीं!

आशा डोर बंधी जबसे!

आशा डोर बंधी जबसे
निशदिन राह तके तबसे
कब आना होगा प्रीतम
प्राण तड़पे तरसे कब से!

कौन तुम क्यों आते पास
शायद कोई अपना खास
जिज्ञासा अब तक बनी हूई
टूट चुकी सब अंतिम आस!

कौन तुम बैठे झील किनारे
शायद तुम हो प्राण प्यारे
आशा विश्वास तुम्हीं पर
हम तो अपना जीवन हारे!

जीवन में छाई निराशा
तुम पर टिकी सारी आशा
नेह बूंदे अब तो बरसा दो
दर-दर भटके प्राण प्यासा!

विधि हृए वाम-भज राम!

चर्चे सरे आम-भज राम!
विधि हृए वाम-भज राम!

सब तरफ डर का साया
बंदी है आवाम -भज राम!

लाशें हो रही लावारिस
गुम हृए नाम-भज राम!

सबको समान कारावास
बंद खा़सो आम-भज राम!

कृमि से बद्तर पहचान
बिके कौड़ी दाम-भज राम!

ज्ञान विज्ञान हृए अपाहिज
जतन सारे नाकाम-भज राम!

प्रासाद वैभव भूल भुलैया
रोते सुबह शाम-भज राम!

रख भरोसा राम पर मानव
बिगड़े बनेंगे काम-भज राम!

आए प्रभु तेरी शरण!

आए प्रभु तेरी शरण!
दिखा, आशा किरण!
जर्जर हाथ थाम लो
संकट में जीवन मरण!

पथ भ्रमित हम भटके
हो रहा समूल क्षरण!
संकट आ रहे बहुतेरे
विपदा सारी करो हरण!

दंभ, मान, मर्दन हुआ
शीश झुका, पड़ते चरण!
मझधार छिटकी पतवार
डूब रही नाव, कैसे तरण!

व्यापे जग, भय, कुशंका
करिए प्रभु, पीड़ा-वरण!
एकमात्र विकल्प, प्रार्थना
अनुनय, निवेदन, स्मरण!

संकट मोचन नाम तिहारो!

ज्ञान, बुद्धि, निधान!
दया करो हनुमान!

वेद्ज्ञ, सर्वज्ञ मर्मज्ञ,
धर्म शास्त्र विधान!

गिरी धारक, धीर वीर
जीव, जगत, कल्याण!

असुर काल, लंका दाहक,
राम शक्ति दूत, बलवान!

रवि मुख लिया बालमन
पवन तनय, दिनमान!

वनवासी, मान बढ़ाया
पाया प्रथम सम्मान!

अहंकार, लोभ, दंभ मुक्त,
नापा जलधि अभिमान!

शरण रक्षक, भक्तवत्सल
सीता राम भक्त, हनुमान!

एक दीप मेरा मिला दो!

जब जले दीप जगमग
एक दीप मेरा मिला दो!
हर-घर मिटे तिमिर गहन
द्वार द्वार सब दीप जला दो!

सुर ताल भूले मन मलीन
राग दीपक फिर सुना दो!
जागकर, घोर तंद्रा सो रहे
तम हटा सबको जगा दो!

नव जीवन नव निवेदन
नव डगर सबको दिखा दो!
ज्ञान प्रकाश फैले हर तरफ
अज्ञान तम सारा मिटा दो!

अंध जन, भ्रम वश भटके
नवीन सोच, दीप जला दो!
संकल्प लें सब दीप बनें
प्रकाश गंगा फिर बहा दो!

फांस अंदर धंसी है!

हाय कैसी बेबसी है!
फांस अंदर धंसी है!

जख्म दिखता नहीं
मन की खुदकुशी है!
खौफ़ छाया सब तरफ
बस, वीरानी बसी है!

सांसे पाबंद पहरे की
शिकंजा, मौत कसी है!
मौत सिरहाने आ बैठी
तुम्हारे लिए तो हंसी है!

इधर-उधर जतन छोड़ो
सांसे कलेजे में फंसी है!
कातिल ठहरा आस-पास
यही तो बड़ी बेकसी है!

अंधेरा बहुत है दीपक जलाओ!

निराशा बहुत है जोत जगाओ!
अंधेरा बहुत है दीपक जलाओ!

छुपे बैठे अनेकों अंदर छलिंदर
आगे बढ़ो और सब को भगाओ!
अकेला दीपक लड़ेगा कहां तक
सब साथ आओ एका दिखाओ!

असुर इकट्ठा चारों तरफ फैले
संकल्प अधूरा जीवन बचाओ
टिमटिमाती लौ जीवन की आशा
हर घर में सारे संकल्प जगाओ!

छुपा दुश्मन भागकर यहां से
जो सोए हुए हैं सबको जगाओ!
दीप मेरा रोशन करेगा दुनिया
हिम्मत दिखाकर अंधेरा मिटाओ!

मां धनुष दे दे मैं रामा बन जाऊं!

मां, धनुष दे दे मैं रामा बन जाऊं!
बाल सखा संग सेना एक सजाऊं!

असुर बड़े जब रामा ने जन्म लिया
अब राष्ट्र संकट में राघव राघव गाऊं!

दैहिक दैविक भौतिक ताप बढ़ चले
भारत भूमि पर राम राज फिर लाऊं!

राष्ट्र निर्माण विमुख, कर्तव्य पथ भूले
समस्त असुर प्रवृत्ति समूल मिटाउं!

राष्ट्र प्रथम, संग जनसेवा जन कल्याण
पीड़ित दुखी जन में, जीवन पूरा लगाऊं!

छद्म वेश धर चंद रावण फिर घुस आए
उन्हें मिटा फिर से, प्रभु कृपा बरसाऊं!

युगों युगों से जीवन दर्शन आदर्श रहा
कोशिश करूं, कुछ राम सा बन पाऊं!

भारत पावन धरा जन्म लिया रामा ने
आरती उतार निशदिन प्रभु गुण गाऊं!

कनक देह का परावर्तन!

सुबह की गुनगुनी धूप में
कर कनक देह से परावर्तन
ओस की अनुरक्त बूंदें
पलकों पर बैठ इतराती!
विगत के अनछुए अनमोल पल
क्यों नेह तूलिका को पकड़
तितलियों में नव रंग भरते
तुम्हें पास पाकर भ्रमर दंभ भरते!
नयन की कोर तुम्हारी जब
फैल कर उन्मत्त व्यक्त होती
चमत्कृत आंखों में हमारी
स्मृतियां फिर तैर जाती!
विगत के अनकहे बंधन
हो चुके है प्रौढ़ अब
तब की झिझकी सी छुअन
स्पंदन आज भी करती!
हवा में तैरती अलका
चंद्र मुख स्पर्श करती
सच कहूं व्योम के बादल
छितरकर फैल जाते हैं!
ओस की संतप्त बूंदे
कान में कुछ कह लजाती
पवन वेग से छिटक
धरा पर फैल जाती है!

नयन में उलझा गगन!

गगन विस्तार पाकर क्यों
धरा के अंतिम छोर पर
क्षितिज की बांहों तले
नयन भर रोने लगे!
दूर एकांत झील किनारे
शांत बैठी एक मूरत
असंख्य बुलबुलों के सहारे
जीवन प्रमाण सौंप देती!
लहरें तरंगित हो अचानक
अनुबंध सारे तोड़ देती
अनियंत्रित हो अशांत
तटबंध सारे तोड़ देती!
नयन जल जब शांत होता
व्योम में उमड़ घुमड़ कर
बादलों के बीच जाकर
हिमखंड बन ठहर जाता!
गगनचुंबी निष्ठुर पर्वत
व्योम से नजरें मिलाकर
नयन में प्रचंड अग्नि भरते
तभी बरस पड़ता मेघ सारा!
खींचकर मेघ आंचल
दृश्य विहंगम देखने को
नयन को विस्तार देकर
नभ निपोरते निशदिन!
वसुंधरा का वैभव निहार
नक्षत्र गति को रोककर
नयन में उलझा गगन!

इस बार अभिनव प्रयोग कीजिए!

घर में ही रहकर सहयोग दीजिए!
इस बार अभिनव प्रयोग कीजिए!

मास्क एकांतवास दूरी हैंड वॉश
सेनीटाइजर का उपयोग कीजिए!

कोरोना को हराना है जरूरी अब
दिए सारे निर्देश का प्रयोग कीजिए!

भले चंगे स्वस्थ हों फिर भी हर दिन
निश्चित समय रोज योग कीजिए!

दीन दुखी लाचार अपाहिज भूखे
सब की सेवा पूर्ण मनोयोग कीजिए!

सिंदूरी शाम!

तुमने ही तो अग्नि के सामने
जन्मों साथ रहने का, मुझसे वादा किया था!

चलते चलते अचानक तुम
बेमन थक कर बैठ गए!
और बिना कुछ कहे चुपचाप
धुंध में कहीं खो गए!

सागर के किनारे बैठ कर
आज जब इस सिंदूरी शाम
सुदूर क्षितिज की ओर
पथराई सी आंखों से
अपलक देखती हूं तो?

धुंध से बाहर निकल तुम
सामने आकर खड़े हो जाते हो!
मैं तुम्हारी छुअन महसूस कर
सिसकने लगती हूं!

तभी मन के सोए सागर में
ज्वार उठने लगता है
और मैं भाव कंकरिया फेंक
लहरों पर सवार हो जाती!

नया सवेरा आएगा हौसला रख!

काला समय जाएगा, हौसला रख!
नया सवेरा आएगा, हौसला रख!

सुरक्षित रह, पहले कवच पहन
कोरोना मारा जाएगा, हौसला रख!

मास्क पहन, हाथ धो, दौड़ मत,
मुंह की वह खाएगा, हौसला रख!

पलायन छोड़ हिम्मत से संभल
जीत पक्की पाएगा, हौसला रख!

सबके अकेले घर में रहने भर से
चाइना जल जाएगा, हौसला रख!

आने वाला कल होगा तेरा अपना
कहानी जग सुनाएगा, हौसला रख!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

रमेशचंद्र शर्मा

१६ कृष्णा नगर(मेन रिंग रोड)
रेती मंडी रोड, राजेंद्र नगर
इंदौर ४५२०१२(म.प्र.)

Email- rcsharma15857@gmail.com
Mobile - 7974377737

सारी दुनिया कोरोना वायरस (महामारी) की गिरफ्त में है। संक्रमण से फैलने वाले इस जानलेवा वायरस का अभी तक कोई पुख्ता इलाज उपलब्ध नहीं है। देश में आपातकाल के हालात बने हुए हैं ।बीमारी की गंभीरता को समझते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश में लॉक डाउन की घोषणा की है। आवश्यक सेवाओं को छोड़कर बाकी सभी रेल, बस, हवाई, सेवाओं पर रोक लगा दी गई है। सभी को अपने घरों में ही लक्ष्मणरेखा की के भीतर रहना है। देश के लिए बड़ा ही घातक समय है। आपातकालीन परिस्थितियां देश और दुनिया में निर्मित हो चुकी है ।

ऐसी विषम परिस्थिति में रचनाकारों पर महती जवाबदारी आ जाती है। अपने परिवेश से रचनाकार अछूता नहीं रह सकता। समाज को ऐसी विषम परिस्थितियों में सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। लोगों में सकारात्मक उत्साहवर्धन किया जाना भी बहुत जरूरी है। ऐसे में सच्चे रचनाकार को अपना दायित्व बोध होना चाहिए। आपातकाल में किया गया सृजन समाज की धरोहर होता है। लेखक अपनी कलम से समाज की विषम परिस्थितियों से शासन को अवगत कराता है। वह सकारात्मक कदमों के समर्थन में भी रचनाओं द्वारा मुख्य भूमिका निभाता है।

लॉक डाउन की इस अवधि में सभी नागरिकों को अपने घरों में ही रहने की बाध्यता रहती है। रचनाकार भी ऐसी विषम परिस्थिति में घरों में रहता है। ऐसे में अंतरा शब्दशक्ति द्वारा रचनाकारों को आपातकाल में लेखन हेतु आमंत्रित करना सच में सराहनीय कदम है। अंतरा शब्द शक्ति द्वारा लेखन कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए अभिनव प्रयास किया गया है। इस आपातकाल में सृजित रचनाओं के प्रकाशन की महती योजना प्रस्तुत की गई है। प्रत्येक रचनाकार से इस अवधि में रचित रचनाओं की १५ रचनाएं बुलवाई गई है। सचमुच यह बहुत बड़ी साहित्य सेवा है। रचनाकारों को इस नव प्रयास से लेखन की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन दोनों मिलते हैं ।

अंतरा शब्द शक्ति का यह नव प्रयास स्तुत्य है। पूरी टीम आपातकाल में सृजन-प्रोत्साहन के लिए साधुवाद के पात्र है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-170-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/